www.rojgarsamachar.gov.in
www.employmentnews.gov.in

अंग्रेजी एवं उर्दू में भी प्रकाशित
वार्षिक शुल्क : ₹ 350

सत्यमेव जयते

रोज़गार समाचार

सभी को अवसर

साप्ताहिक

खण्ड 38 अंक 30 पृष्ठ 48 | नई दिल्ली 26 अक्तूबर - 1 नवंबर 2013 | ₹ 8.00

रोज़गार सारांश

रेलवे

- दक्षिण पूर्वी रेलवे को 3136 प्वाइंट्समैन-बी, ट्रैकमैन, हैल्पर- II और सफाईवाला की आवश्यकता

अंतिम तिथि: 25.11.2013

- पूर्वोत्तर रेलवे और चित्तरंजन लोकोमोटिव वर्क्स को 2830 पोर्टर, गेटमैन, गेटकीपर, खलासी/हेल्पर, हेल्पर-II, चपरासी/सीकेडीआर/स्वच्छता क्लीनर/हेल्पर आदि की आवश्यकता

अंतिम तिथि: 15.11.2013

आयुध निर्माणी

- आयुध निर्माणी, कानपुर को 531 फिटर, मैकेनिस्ट, वेल्डर, इलेक्ट्रोप्लेटर, पेंटर, टर्नर आदि की आवश्यकता

अंतिम तिथि: 23.11.2013

सं.लो.से.आ.

- संघ लोक सेवा आयोग द्वारा विभिन्न पदों के लिए आवेदन आमंत्रित

अंतिम तिथि: 15.11.2013

बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों, सशस्त्र सेनाओं, रेलवे और अन्य सरकारी विभागों की अन्य रिक्तियों के लिए अंदर के पृष्ठ देखें.

वेब विशेष

www.rojgarsamachar.gov.in पर वेब विशेष खण्ड में निम्नलिखित आलेख उपलब्ध है :

1. 'पाइलिन' से निपटने के लिए प्रभावशाली प्रयासों की तैयारी

जलवायु परिवर्तनः एक वास्तविकता

डॉ. एम.ए. हक़

जलवायु परिवर्तन हमारे समय की प्रमुख चुनौती के रूप में उभरा है. यह एक प्रमाणित तथ्य है कि औद्योगिक युग जहां एक ओर प्रौद्योगिकीय, आर्थिक और सामाजिक विकास लाया है, जिसका परिणाम उन्नत जीवन है, लेकिन दूसरी ओर औद्योगिक क्रांति का परिणाम विभिन्न गैसों की वायुमंडलीय सांद्रता में परिवर्तन सहित अनेकों समस्याएं हैं. मानव विशिष्ट कार्यकलापों के परिणामस्वरूप ऐसे परिवर्तन भूमंडलीय तापन का प्रमुख कारण हैं, जिसका परिणाम विश्व भर में जलवायु प्रतिमान और जलवायु स्थितियों में परिवर्तन है.

धरती की जलवायु सौर विकिरण के बड़े भाग को गुजरने की अनुमति देता है, जो धरती की सतह तक ऊर्जा लाता है. वहां यह ऊर्जा इन्फ्रा-रेड विकिरण में परिवर्तित हो जाती है और ऊपर की ओर चली जाती है. वह ऊर्जा धरती को गर्म रखती है और धरती का औसत तापमान लगभग 15 डिग्री सेल्सियस रहता है. यह तापवृद्धि ग्रीनहाउस प्रभाव कहलाता है. कार्बन डाईऑक्साइड, मीथेन, ओजोन, क्लोरोफ्लूरोकार्बन, नाईट्रस ऑक्साइड, जल वाष्प महत्वपूर्ण ग्रीनहाउस गैसें हैं. यदि ये गैसें धरती के वायुमंडल में न हों, तो धरती का औसत तापमान -20 डिग्री सेल्सियस हो सकता है और धरती पर जीवन मौजूद नहीं रह सकता है क्योंकि जीवन के लिए द्रव जल अनिवार्य है.

पिछले दिनों में ग्रीनहाउस गैसें, खासकर कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा बढ़ती रही है. जिसके परिणामस्वरूप धरती का औसत तापमान बढ़ रहा है. साक्ष्य यह इंगित करते हैं कि 1990 से धरती के सतह का तापमान प्रति दशक लगभग 0.15 डिग्री सेल्सियस बढ़ा है. विशेशज्ञों की राय है कि यदि यह प्रवृत्ति जारी रही तो सबसे खराब स्थिति तब होगी जब 21वीं शदी के अंत तक धरती का तापमान 4.8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाएगा. वह विपत्तिपूर्ण होगा. तापमान में वृद्धि का प्रत्यक्ष प्रभाव होता है और अधिक महत्वपूर्ण यह है कि यह धरती की जलवायु को प्रभावित करेगा. ऊपरी समुद्र का तापमान भी 1971 से 2010 के दौरान बढ़ा है. समुद्र की सतह में वृद्धि हिमनद और बर्फ की तीव्रता से पिघलने के कारण जल के आने वाले प्रवाह में वृद्धि के साथ सीधे तापवृद्धि की वजह से हुई है. यह देखा गया है कि ग्रीनलैंड और अंटार्कटिक की बर्फ सतह पिछले दो दशकों से सिकुड़ रही है. उच्च क्षेत्र में बर्फ पुंज भी तेजी से पिघल रहा है. यदि वर्तमान स्थिति जारी रही तो 2100 तक औसत समुद्र स्तर में 19 से 82 सें.मी. की वृद्धि होगी.

भूमंडलीय तापन और सतत जलवायु परिवर्तन के पीछे का कारण अब प्रमाणित है. ग्रीनहाउस गैसों का वायुमंडलीय सांद्रता में उस स्तर तक वृद्धि हुई है, जो पिछले 800,000 वर्ष में रिकार्ड नहीं किया गया है. जिसके परिणामस्वरूप धरती की प्रणाली द्वारा प्राप्त कुल विकिरण ऊर्जा पहले की तुलना में उच्चतर है. यह भी प्रमाणित हो चुका है कि कार्बनडाईऑक्साइड इस संबंध में प्रमुख भूमिका निभा रहा है. 1958 से कार्बन डाईऑक्साइड के वायुमंडलीय स्तर में करीब 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई है. इस स्थान पर यह उल्लेख करना विवेकपूर्ण होगा कि हाल की घटना के रूप में जलवायु परिवर्तन को लोगों द्वारा देखा गया है. वास्तविक स्थिति यह है कि वैश्विक जलवायु पर मानवीय कार्यकलापों के प्रभाव पर 150 वर्ष से अधिक से चर्चा की जा रही है और प्रारंभ से ही वैज्ञानिक जलवायु परिवर्तन में मानव के योगदान की ओर संकेत कर रहे हैं. 1979 में विश्व मौसम विज्ञानीय संगठन के विश्व जलवायु सम्मेलन ने यह निष्कर्ष निकालाः ''यह तर्कसंगत प्रतीत होता है कि वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड की बढ़ती मात्रा खासकर उच्चतर क्षेत्र में निम्न वायुमंडल के धीरे-धीरे गर्म होने में अंशदान दे सकता है...यह संभव है कि क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर कुछ प्रभावों को इस सदी के अंत तक पता लगाने योग्य बनाया जा सकता है और यह अगली सदी के मध्य तक महत्वपूर्ण हो जाता है. तब से आगे जलवायु परिवर्तन को वास्तविकता के रूप में स्वीकार किया गया है.'' 1985 में यह निष्कर्ष निकाला गया कि ग्रीनहाउस गैसों को अगली सदी में तापवृद्धि का महत्वपूर्ण कारण बनने की संभावना है और कि कुछ तापवृद्धि अनिवार्य थी. 1988 में जलवायु परिवर्तन के कारणों, परिणामों आदि को देखने के लिए जलवायु परिवर्तन पर अंतर-शासकीय पैनल (आई पी सी सी) की स्थापना की गई. आई पी सी सी ने सितम्बर 2013 में अपनी पांचवीं रिपोर्ट पेश की, जहां आई पी सी सी ने जोर देकर कहा है कि यह अत्यधिक संभावना है कि 1951 से 2010 के बीच भूमंडलीय तापमान में आधी वृद्धि मानवीय कार्यकलापों से हुई है. रिपोर्ट में यह जोर दिया गया है कि यदि तापमान में वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस के भीतर रखना है, जो प्रतिकूल प्रभाव को सीमा के भीतर रखता है, तो उत्सर्जन को 880 गीगा टन कार्बन के भीतर रखा जाना होगा. मुद्दा यह है कि 2011 तक 531 गीगा टन उत्सर्जित किया जा चुका है. अतः 350 टन उत्सर्जित करना शेष रह गया है. इसके ऊपर यह खतरनाक क्षेत्र होगा. लेकिन समस्या यह है कि मानव की प्रकृति समस्याओं का सामना करने के बजाय अस्वीकृति की पक्षधर है. जलवायु परिवर्तन के मामले में भी ऐसा ही है. बड़ी संख्या में लोगों को संदेह है कि क्या वास्तव में ऐसा है. दूसरे तरह के कुछ लोग यह सोचते हैं कि समस्याएं अपने आप ठीक हो जाएंगी.

इस बिंदु पर क्योटो प्रोटोकॉल, जिसे 1997 में अपनाया गया था, का उल्लेख करना अनिवार्य है. इस प्रोटोकॉल का

(शेष पृष्ठ 2 पर)

अर्ध-चिकित्सा सेवाओं में कॅरिअर के विकल्प

अर्ध-चिकित्सा सेवा स्वास्थ्य सुरक्षा सेवा का एक महत्वपूर्ण घटक है. अर्ध-चिकित्सा शब्द अपनी छत्रछाया में विभिन्न नैदानिक तथा रोगोपचार सेवाओं के साथ अत्यधिक व्यापक है. नर्सिंग फार्मेसी रेडियोग्राफी, चिकित्सा प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी, स्पीच थैरेपी, पुनर्स्थापन थैरेपी तथा ऐसे ही अन्य उपचार इस स्वास्थ्य सुरक्षा शृंखला में आते हैं.

अर्ध-चिकित्सा सेवाएं अर्ध-चिकित्सकों द्वारा दी जाती हैं. अर्ध-चिकित्सक वे व्यवसायी होते हैं, जो मरीजों के नैदानिक तथा रोगोपचार के माध्यम से डाक्टरों की सहायता करते हैं. वे मरीजों की सम्पूर्ण देखभाल के लिए जिम्मेदार चिकित्सा दल का भाग होते हैं, जिसमें मरीज का स्वास्थ्य लाभ शामिल होता है.

वे स्वास्थ्य सुविधाओं की देखरेख भी करते हैं. मरीजों को पूर्ण एवं प्रभावी स्वास्थ्य सुरक्षा देने के लिए उनकी सेवाएं अनिवार्य होती हैं. गंभीर तथा पुराने रोगों से ग्रस्त मरीजों को स्वास्थ्य लाभ सेवाएं देने के लिए अर्धचिकित्सक आधुनिक प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हैं. आपातकाल के मामले में वे प्रारंभिक चिकित्सा तथा चोट सुरक्षा प्रदाता के रूप में कार्य करते हैं.

अब हम यहां अर्ध-चिकित्सा विज्ञान के विभिन्न साधनों की जानकारी देते हैं.

फिजियोथैरेपी: यह व्यायाम तथा मालिश के माध्यम से शारीरिक अक्षमताओं का उपचार है. इसका उद्देश्य शारीरिक रूप से अशक्त व्यक्तियों या गठिया जैसे अपकर्षक (डिजेनरेटिव) रोगों से ग्रस्त व्यक्तियों में शारीरिक कार्यों में सुधार लाना तथा उनकी अशक्तता को न्यूनतम करना है. फिजियोथेरापिस्ट की सेवाएं डिस्लोकेशन, एम्प्यूटेशन, नर्व इंजरीज तथा मस्कुलर रोगों के ऑपरेशन के बाद की सेवाओं से जुड़ी होती हैं.

नर्सिंग: यह चिकित्सा देखभाल का महत्वपूर्ण भाग होता है तथा अत्यधिक लोकप्रिय अर्ध-चिकित्सा सेवा होती है. नर्स का कार्य फिजिशियन द्वारा मरीजों के लिए यथा निर्धारित, देखभाल करना होता है. नर्स की सेवाएं चिकित्सा देखरेख के प्रत्येक चरण पर अपेक्षित होती हैं. विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मेडिकल सर्जिकल नर्सिंग, पीडिएट्रिक नर्सिंग तथा साइकेट्रिक नर्सिंग जैसे विशेषज्ञतापूर्ण क्षेत्र उभर कर सामने आए हैं.

फार्मेसी: यह औषधि तैयार करने एवं देने से जुड़ा विज्ञान है. फार्मासिस्ट वे व्यवसायी होते हैं जो रोगियों के लिए निर्धारित औषधियां बनाते तथा देते हैं. वे मरीजों को विभिन्न औषधियों के बारे में जानकारी भी देते हैं.

चिकित्सा प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी: जैसा कि इस नाम से स्पष्ट है, चिकित्सा प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी, रोगियों में रोग के कारण तथा प्रकृति का पता लगाने एवं उसे समझने के लिए प्रयोगशाला में प्रयुक्त की जाने वाली तकनीकों से संबंधित है. चिकित्सा प्रयोगशाला तकनीशियन मानव शरीर के फ्लुइड टिशू, रक्त, माइक्रोऑर्गेनिज्म, रसायनों तथा सेल आदि का विश्लेषण करते हैं. वे जांच के लिए नमूना एकत्र करते हैं, जांच करते हैं और परिणाम की रिपोर्ट देते हैं एवं उन्हें प्रलेख के रूप में तैयार करते हैं.

रेडियोग्राफी: रेडियोग्राफर ट्यूमर, इंटरनल सिस्ट एवं कैंसर जैसे रोगों का पता लगाने के लिए एक्सरे, फ्लुरोस्कोपी, अल्ट्रासाउंड, सी.टी. स्कैन, एम.आर.आई., एंजियोग्राफी तथा पी.ई.टी. प्रौद्योगिकियों जैसी तकनीकों का इस्तेमाल करते हैं. वे ऐसी रेडिएशन थैरेपी से भी जुड़े होते हैं, जहां उनकी जिम्मेदारी उपचार के दौरान उपकरणों तथा रेडिएशन पर नियंत्रण रखने की होती है.

रिहेबिलिटेशन थैरेपी: यह रोगियों को, कार्यगत सीमाओं पर नियंत्रण प्राप्त करने में सक्षम बनाती है. यह परिसीमन चोट, रोग, सर्जरी या विकासात्मक व्यतिक्रम से हो सकता है. यह थैरेपी रोगियों को शारीरिक एवं मानसिक दोनों तरह के स्वास्थ्य पुनः प्राप्त करने के लिए दी जाती है.

ऑक्यूपेशनल थैरेपी: यह थैरेपी रोगियों को दैनिक कार्यों में भाग लेने में सक्षम बनाती है. इस उपचार का उद्देश्य शारीरिक तथा मानसिक परिसीमन वाले रोगियों की सहायता करना, उनके जीवन में आत्मनिर्भर बनाना तथा उसे बनाए रखना है. ऑक्यूपेशनल थेरापिस्ट अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मरीजों को सक्षम बनाने और उनके आसपास के वातावरण-दोनों पर कार्य करते हैं.

ऑडियोलोजी एवं स्पीच पैथॉलोजी : ऑडियोलोजिस्ट श्रवण संबंधी समस्याओं का निदान एवं उपचार करते हैं. वे श्रवण शक्ति की लुप्तता की रोकथाम उपयुक्त श्रवण-उपकरण लगाने तथा न्यायिक ऑडियोलोजी भाग लेने संबंधी परामर्श देते हैं. स्पीच पैथोलोजिस्ट दुर्घटनाओं, ऑटिज्म, सेरेब्रलपल्सी, स्ट्रॉक या इंटेलैक्चुअल अक्षमता के कारण उत्पन्न होने स्पीच, वाइस एवं भाषा व्यतिक्रम से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए निदान तथा थैरेपी देते हैं.

ऑपरेशन थियेटर टेक्नालोजी: टेक्नालोजी के औषधि के क्षेत्र में और अधिक एकीकृत होने के साथ ही, सर्जन, ऑपरेशन थियेटर में परिष्कृत वैद्युत तथा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं. वास्तव में आज सर्जन जटिल सर्जिकल कार्य रोबोट की सहायता से कर रहे हैं. ऑपरेशन थियेटर टेक्नोलोजी थियेटर उपकरणों एवं अस्पताल पाइपलाइन प्रणाली के परिचालन एवं रखरखाव से संबंधित होती है. तकनीशियन ऑपरेशन थियेटरों में एनेस्थिसियोलोजिस्ट की, क्रिटिकल केयर यूनिटों की और पोस्ट ऑपरेटिव कक्ष में भी सहायता कर सकते हैं.

उक्त विज्ञानों के अतिरिक्त रोनल डायलासिस टेक्नालोजी, ऑप्टोमीटरी, आपात एवं ट्रॉमा केयर टेक्नालोजी उपचार के कुछ अन्य अर्ध-चिकित्सा विज्ञान हैं.

अर्ध-चिकित्सा सेवाओं के क्षेत्र में कॅरिअर बनाने के लिए आपको किसी मान्यताप्राप्त संस्थान से संबंधित पाठ्यक्रम पूरा करना होगा. इन विषयों में पाठ्यक्रम डिप्लोमा से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक और यहां तक कि पीएच.डी स्तर पर भी उपलब्ध है.

अर्ध-चिकित्सा कार्मिकों को प्राय दबाव में कार्य करना पड़ता है. यदि आप इस क्षेत्र में कॅरिअर प्रारंभ के बारे में सोच रहे हैं तो आपको लंबे समय तक तथा विषम पारियों में कार्य करने का इच्छुक होना चाहिए. चूंकि ये व्यवसायी चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े होते हैं, इसलिए आप में धैर्य तथा सहनशीलता होनी चाहिए. व्यापक तकनीकी कौशल होने के अतिरिक्त आप में संकट के समय शांत बने रहने की क्षमता, प्रखर मस्तिष्क, व्यक्ति कौशल तथा संचार कौशल होना चाहिए.

अर्ध-चिकित्सकों के लिए पर्याप्त रोज़गार के अवसर हैं. स्वास्थ्य सुरक्षा सुविधाओं के तीव्रता से बढ़ने के साथ ही इन व्यवसायियों के लिए अवसरों की कोई कमी नहीं है. विषयों के आधार पर सरकारी तथा निजी अस्पतालों, नैदानिक केंद्रों, सरकारी विभागों, पुनर्स्थापन केंद्रों, गैर-सरकारी संगठनों एवं स्कूलों में रोज़गार के अवसर प्राप्त किए जा सकते हैं. अर्ध-चिकित्सकों के लिए विदेशों में भी शानदार संभावनाएं हैं.

स्वास्थ्य विज्ञान में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिए अर्ध-चिकित्सा सेवा एक शानदार कॅरिअर विकल्प है. यह क्षेत्र निरंतर सीखने एवं अत्यधिक व्यावसायिक संतुष्टि के अवसर प्रदान करता है. यदि आप स्वास्थ्य देखभाल में कॅरिअर तलाश रहे हैं तो इस विकल्प पर विचार अवश्य करें.

कॉलेज एवं पाठ्यक्रम

कॉलेज	पाठ्यक्रम	पात्रता मानदंड	प्रवेश मानदंड	वेबसाइट
निज़ाम आयुर्विज्ञान संस्थान, हैदराबाद	मास्टर ऑफ फिजियोथैरेपी	बी.पी.टी.	प्रवेश-परीक्षा में प्रदर्शन	http://nims.ap.nic.in
एस.आर.एम. विश्वविद्यालय, तमिलनाडु	बैचलर ऑफ फिजियोथैरेपी	भौतिकी, रसायन विज्ञान एवं जीव विज्ञान सहित 10+2	अर्हता परीक्षा में प्राप्त अंक	www.srmuniv.ac.in
राष्ट्रीय पुनर्स्थापन प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, उड़ीसा	बैचलर ऑफ ऑक्यूपेशनल थैरेपी	10+2	प्रवेश-परीक्षा में प्रदर्शन	http://nirtar.nic.in
मणिपाल विश्वविद्यालय, कर्नाटक	मास्टर ऑफ ऑक्यूपेशनल थैरेपी	बी.ओ.टी.	प्रवेश-परीक्षा में प्रदर्शन	www.manipal.edu
दक्कन स्कूल ऑफ फार्मेसी, हैदराबाद	फार्म. डी	10+2	प्रवेश-परीक्षा में प्रदर्शन	www.deccanpharmacy.org
श्री रामचंद्र विश्वविद्यालय, तमिलनाडु	चिकित्सा प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी में एम.एससी.	बीएस.सी-समवर्गी स्वास्थ्य विज्ञान/चिकित्सा प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी/जैव रसायन विज्ञान/ सूक्ष्म जीव विज्ञान/ जैव प्रौद्योगिकी/आनुवंशिकी	प्रवेश-परीक्षा में प्रदर्शन	www.srmc.edu
श्री वेंकेटेश्वर आयुर्विज्ञान संस्थान तिरुपति	रेडियोग्राफी एवं इमेजिंग प्रौद्योगिकी में बी.एससी.	10+2	-	http://svimstpt.ap.nic.in
ए.आई.आई.एम.एस., दिल्ली	नर्सिंग में बी.एससी.	जीवविज्ञान, भौतिकी एवं रसायन विज्ञान सहित 10+2	प्रवेश-परीक्षा में प्रदर्शन	www.aiims.edu
श्री रामचंद्र विश्वविद्यालय श्री रामचंद्र नर्सिंग कालेज, चेन्नै	नर्सिंग में एम.एससी.	बी.एस.सी. (एन) एवं एक वर्ष का अनुभव/बी.एससी (प्रशिक्षित नर्सों के लिए नर्सिंग)	प्रवेश-परीक्षा में प्रदर्शन	www.srmc.edu
ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ स्पीच एंड हीयरिंग, मैसूर	एम.एससी. स्पीच लैंगुएज पैथोलोजी	स्पीच लैंगुएज पैथोलोजी में बी.एससी.	प्रवेश-परीक्षा में प्रदर्शन	www.aiishmysore.com

(यह लेख सिकंदराबाद स्थित TMIE2E अकादमी कॅरिअर सेंटर (आं.प्र.) से प्राप्त हुआ है. ई-मेलः faqs@tmie2e.com)

जलवायु परिवर्तन ....

(पृष्ठ 1 का शेष)

उद्देश्य 37 औद्योगिक क्षेत्रों के लिए अनिवार्य उत्सर्जन कटौती और चीन और भारत जैसे देशों के लिए स्वैच्छिक कमी की कार्रवाई की शर्त लगाकर धरती के बढ़ते तापमान और परिणामी जलवायु परिवर्तन की देखरेख करना था. यह प्रोटोकॉल दिसम्बर, 2012 में समाप्त होना था. तथापि, 2012 के अंत में दोहा में लगभग 200 देशों के प्रतिनिधि 2020 तक दूसरे चरण पर सहमत हुए. इस बीच जलवायु परिवर्तन के दिखाई देने वाले खतरे के लिए कोई सौहार्द्रपूर्ण समाधान का पता लगाने लिए वार्ताएं जारी रहेंगी. संपन्न देश चाहते हैं कि क्योटो प्रोटोकॉल के दूसरे चरण के दौरान उभरती हुई अर्थव्यवस्था के लिए उत्सर्जन लक्ष्य हो. चीन और भारत इस प्रस्ताव का विरोध करते हैं. वे अपने उत्सर्जन में कटौती करना चाहते हैं, लेकिन स्वेच्छा से. आज तक भी मामले का समाधान नहीं हुआ है. संपन्न राष्ट्र देशों द्वारा कुल उत्सर्जन पर जोर देते हैं, जबकि विकासशील देश चाहते हैं कि प्रति व्यक्ति उत्सर्जन का बेंचमार्क हो.

इस संबंध में यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि यद्यपि जलवायु परिवर्तन का पूरी धरती पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है, विकासशील देशों को गंभीर परिणामों का सामना करना पड़ेगा. उनके पास जलवायु परिवर्तन के लिए स्वयं को समायोजित करने और इससे लड़ने के लिए अतिरिक्त संसाधन नहीं हैं. पुनः संसाधनों की कमी और प्रकृति पर उनकी अत्यधिक निर्भरता के कारण विकासशील देशों में गरीब देश अत्यधिक प्रभावित होंगे. उदाहरण के लिए भारत में लगभग 60 प्रतिशत खेती मानसून पर निर्भर करती है. हम जानते हैं कि मानसून में परिवर्तन गरीब किसानों को अत्यधिक प्रभावित करता है. अतः जिन लोगों ने जलवायु परिवर्तन में कोई भूमिका नहीं निभाई नहीं है, उन्हें सबसे अधिक भुगतना पड़ेगा.

लगभग पिछले एक दशक में हिमालय के कुछ क्षेत्रों में तापमान में 0.6 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई है. हिमालय के क्षेत्र में इस तरह तापमान में वृद्धि कृषि जैव-विविधता, लोगों की स्वास्थ्य स्थिति, प्राकृतिक आपदाओं आदि को बुरी तरह प्रभावित कर सकता है. एक महत्वपूर्ण परिणाम हिमालयी क्षेत्र और उसके निचले हिस्से में जल की उपलब्धता में कमी होगी. इसके अलावा हिमालय और उसके निचले हिस्से में बाढ़ों की बारंबारिता में वृद्धि होगी, क्योंकि पिघले पानी की मात्रा विभिन्न मौसमों में उग्रता से परिवर्तित होगा. समेकित प्रभाव यह होगा कि क्षेत्र की समग्र अर्थव्यवस्था और लोगों का जीवन स्तर प्रभावित होगा.

भारत के लिए जलवायु परिवर्तन एक बड़ी चुनौती है. प्रथमतः मानसून के अत्यधिक अनिश्चित होने की संभावना है. वर्तमान शताब्दी में मानसून पहले ही अनिश्चित रहा है, जिसके परिणामस्वरूप सूखे और बाढ़ जैसी आपदाएं आई हैं. तापमान में और वृद्धि से अक्सर ही बाढ़, सूखा और तूफान आने की संभावना है, जिसका अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ेगा. समुद्र के स्तर में वृद्धि अत्यधिक दबाव लाएगी, क्योंकि भारत के पास लगभग 7500 कि.मी. की तट रेखा है. केरल और उड़ीसा में तट क्षरण तीव्र शुरू हो चुका है. समुद्र के स्तर में और वृद्धि समस्या को और बढ़ाएगा. चेन्नै, कोच्चि, कोलकाता, मुम्बई सहित अनेक भारतीय नगरों के अनेक भाग समुद्र स्तर से एक मीटर से भी कम ऊंचा है. उन क्षेत्रों में बाढ़ का सामना करना पड़ सकता है. केन्या सहित दुनिया के अनेक भागों में समुद्र के स्तर में वृद्धि के कारण समुद्र के पानी द्वारा तटीय कुएं संदूषित हो रहे हैं. भारतीय तटों पर भी इसी तरह की समस्याओं को नकारा नहीं जा सकता है.

हमें ग्रीनहाउस गैसें, खासकर कार्बनडाईऑक्साइड के उत्सर्जन को कम करने के लिए वैश्विक स्तर पर तुरंत कार्रवाई करने की आवश्यकता है. जीवाश्म ईंधन मुख्य स्रोत हैं. हमें विकल्पों के बारे में सोचने की आवश्यकता है.

(लेखक केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पर्यावरण मंत्रालय के पूर्व वैज्ञानिक हैं और पर्यावरणीय मुद्दों पर उनके आलेख और पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं.

ईमेलःasrarulhaque@hotmail.com)